Dr. M. Kantha
Dept of Sociology
V.S.J. college, Rajnagar

Question- संस्कृतिकरण की अवधारणा दीजिए। भारतीय समाज में परिवर्तन लाने में इसकी भूमिका दर्शाइए।

Ans- समाजशास्त्रीय साहित्य में संस्कृतीकरण की संकल्पना का स्थान योगदान M. N. Srinivas का है। इस संकल्पना द्वारा श्रीनिवास भारतीय जाति-प्रथा की संरचना व संस्तरण में होने वाले परिवर्तन को समझाने का प्रयत्न किया है। संस्कृतीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा निम्न जाति या समूह के लोग अपनी जातीय या सामाजिक स्थिति को परिशुद्ध, परिमार्जित व उन्नत करने के उद्देश्य से उच्च जाति के आदर्शों, मूल्यों, विचारों, कृत्यों तथा संस्कारों को ग्रहण कर लेते हैं।

संस्कृतीकरण की संकल्पना

M. N. Srinivas अपनी पुस्तक Social change in Modern India में प्रस्तुत किए हैं उन्होंने लिखा है कि "Sanskritization is the process by which a 'low' Hindu caste, or tribal or other group changes its customs, rituals, ideology and way of life in the direction of high and frequently twice born caste"

अर्थात् संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई निम्न हिन्दू जाति या जनजाति अपने से उच्च किसी जाति और प्रायः द्विज जातियों के समान ही अपने रीति-रिवाजों, कर्मकाण्डों, विचारों और जीवन शैली को बदलने लगती है। आज निम्न जातियाँ सामाजिक और धार्मिक जीवन में सभी व्यवहार करने लगी है जिनकी अनुमति पहले केवल उच्च जातियों को ही मिली थी। उदाहरण के लिए, जनेऊ धारण करना, शाकाहारी भोजन करना, सोने-चाँदी का आभूषण पहनना तथा धार्मिक कर्मकाण्डों का पालन करना, इसी तरह के व्यवहार हैं।

संस्कृतिकरण के अन्तर्गत निम्न जातियों द्वारा उन सांस्कृतिक परम्पराओं का पालन किया जाने लगता है जिनका सम्बन्ध हिन्दुओं की वृहत परम्पराओं से होता है। उदाहरण के लिए पाप-पुण्य, कर्म-धर्म में विश्वास, संस्कारों की पूर्ति, मोक्ष सम्बन्धी विश्वास और पर्व-त्यौहारों का मानने के तरीके कुछ ऐसी सांस्कृतिक विशेषताएं हैं जिनका सम्बन्ध हिन्दुओं की वृहत परम्पराओं से होता है। जब निम्न सामाजिक स्थिति वाली किसी जाति के लोग इन परम्पराओं के अनुसार अपने जीवन के ढंग को बदलने लगते हैं और उनकी सामाजिक स्थिति पहले की तुलना में कुछ ऊँची हो जाती है तो सांस्कृतिक विशेषताओं में होने वाली परिवर्तन का नाम संस्कृतिकरण है।

भारत के विभिन्न भागों में आज बहुत सी जनजातियों में संस्कृतिकरण की प्रक्रिया द्वारा प्रभावित समझा जा रहा है बहुत से जनजातियों के समूह में धार्मिक और जुड़ाव विश्वासों में बदलाव आया है अब वे संस्कृतिकरण के कारण हिन्दू के धार्मिक विश्वास और कर्मकाण्ड को अपनाना प्रारंभ कर दिये हैं तथा अब जनेऊ एवं अन्य मालाओं को धारण कर अपने को ब्राह्मण एवं क्षत्रिय कहने लगे हैं। श्रीनिवास के अनुसार संस्कृतिकरण के कारण जनजातियों के सामाजिक संरचना में भी बदलाव आया है।

श्रीनिवास के अनुसार संस्कृतिकरण में निम्न जाति अपने क्षेत्र की प्रभु जाति की सांस्कृतिक विशेषताओं को अनुकरण करने लगते हैं तो वह संस्कृतिकरण है जब किसी गाँव में किसी जाति का जनसंख्या अधिक होती है तथा उसका आर्थिक-राजनीतिक प्रभाव बढ़ने लगता है तो ऐसे शक्तिशाली जाति प्रभु जाति है आज अहीर, जाट, राजपूत ... यादव

रेड्डी जैसे जातियों का आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव निम्न जाति के जीवन-शैली पर पड़ा है अर्थात् प्रभु जाति को शक्तिशाली एवं प्रभाव मान-कर उनका जीवन-विधि निम्न जाति अनुकरण किए है जो संस्कृतिकरण है।

सामाजिक परिवर्तन में संस्कृतिकरण की भूमिका आज आधुनिक भारत में,

संस्कृतिकरण की प्रक्रिया ने निम्न जातियों, जन जातियों एवं अन्य समूह की सामाजिकस्थिति - रीति-रिवाज आदर्श, मूल्य, कर्मकांड, विचार आदि में उल्लेखनीय परिवर्तन हो रहा है अतएव संस्कृतिकरण परिवर्तन लाने में भूमिका अदा किया है जो निम्न है - जैसे :-

1. निम्न जातियों की जीवन शैली में परिवर्तन :-
संस्कृतिकरण के प्रभाव से निम्न जातियों की सामाजिकस्थिति में सुधार एवं नयी चेतना का विकास हुआ है। आज उच्च जातियाँ एवं निम्न जातियाँ का व्यवहार-प्रतिमान एक जैसा बन गया है।

2. जातिगतनियमों की कठोरता में कमी -
अब निम्न जातियों एवं उच्च जातियों के बीच सामाजिक सम्पर्क और खान-पान का भेदभाव समाप्त गया है। निम्न जातियाँ राजनीतिक, प्रशासन, शिक्षा, उद्योग और व्यापार में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। पवित्रता और अपवित्रता की भावना बदल गयी है अर्थात् जाति के कठोरनियम अब समाप्त हो गए हैं जो संस्कृतिकरण का देन है।

3. समाज की शक्ति संरचना में परिवर्तन :-
संस्कृतिकरण के कारण निम्न जातियों की राजनीतिक और सामाजिक शक्ति में विस्तार हुआ है गाँव-पंचायत से लेकर केन्द्र सरकार तक इनका एकाधिकार बढ़ा है जिसमें, आरक्षण एवं अन्य संवैधानिक सुविधाओं का भी हाथ है।

4. अन्तर्जातीय सम्बन्धों में परिवर्तन -
संस्कृतिकरण का एक प्रभाव विभिन्न जातियों के बीच बढ़ते हुए सम्बन्ध के रूप में देखने को मिलता है। संस्कृतिकरण के कारण सांस्कृतिक विभेद और सामाजिक दूरी जातियों के बीच घटी है।

5. गतिशीलता में वृद्धि -
आज निम्न जातियां नगर एवं महानगर में जाकर, स्थान परिवर्तन करके एवं आर्थिक क्षेत्र में सुधार कर, अपनी सामाजिक स्थिति को ऊंचा किया है।

6. असंस्कृतिकरण का जन्म -
अब उच्च जातियां कृषिकार्य, व्यापार, मजदूरी एवं पैसा के लिए अमानवीय कार्य करने लगे हैं मदिरा, मांस और निषेध वस्तुओं का सेवन कर, असंस्कृति बन गए हैं।

7. नयी समस्याओं का प्रादुर्भाव -
संस्कृतिकरण के कारण अन्तर्जातीय तनाव और संघर्ष की स्थिति गाँव में बढ़ी है अब निम्न जातियों में बालविवाह, दहेज प्रथा और महिला उत्पीड़न बढ़ा है।

अतः एव, भारतीय समाज की परम्परागत सांस्कृतिक विशेषताओं को बदलने में संस्कृतिकरण की भूमिका महत्त्वपूर्ण मानी गयी है।